SET-C

(This question paper contains 2 printed pages)

Roll No. .....

Sl.No. of Q. Paper : 568

Unique nPapern Code : 52051416

Name of the Paper : Hindi-B

Name of the Course : B.Com (Prog.) LOCF

Semester : IV

Time : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश :

इस प्रश्न-पत्र मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

हिंदी

1. नाटक के विकास पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

हिंदी गद्य के विकास पर प्रकाश डालिए।

2. नमक का दारोगा कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

कहानी के तत्त्वों के आधार पर गुण्डा कहानी की समीक्षा कीजिए।

3. 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। 12

अथवा

'ईमानदारी' निबंध की मुख्य संवेदना पर प्रकाश डालिए।

4. संस्मरण के तत्त्वों के आधार पर 'बिबिया' की समीक्षा कीजिए। 12

अथवा

'अंधेर नगरी' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं एक पर टिप्पणी लिखिए – 7

(क) भारतेन्दु युगीन नाटक

(ख) प्रेमचन्दोत्तर कहानी

6. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :– 10X2=20

(क) हम सरकारी हुक्म को नहीं जानते और सरकार को। हमारे सरकार तो आप ही हैं। हमारा और आपका तो घर का मामला है, हम कभी आपसे बाहर हो सकते हैं? आपने व्यर्थ का कष्ट उठाया। यह हो नहीं सकता कि इधर से जाएँ और इस घाट के देवता को भेंट न चढ़ावें।

अथवा

'महारानी! नन्हकूसिंह अपनी सब जमींदारी स्याँग, भैंसों का लड़ाई, घुड़दौड़ और गाने–बजाने में उड़ाकर अ डाकू हो गया है। जितने खून होते हैं, सब में उसी का हाथ रहता है। जितनी...' उसे रोककर दुलारी ने कहा 'यह सब झूठ है। बाबू साहब के ऐसा धर्मात्मा तो कोई है ही नहीं। कितनी विधवाएँ उनकी दी हुई धोती से अपना तन ढँकती हैं। कितनी लड़कियों की ब्याह–शादी होती है। कितने संताए हुए लोगों की उनके द्वारा रक्षा होती है।'

(ख) प्रेम ही बड़ी चीच है, क्योंकि वह हमारे भीतर है। उच्छृंखलता की प्रवृत्ति है, 'स्व' का बंधन मनुष्य का स्वभाव है। बूढ़े की बात अच्छी लगी या नहीं, पता नहीं। उसे गोली मार दी गई; आदमी के नाख़ून बढ़ने की प्रवृत्ति ही हावी हुई। मैं हैरान होकर सोचता हूँ–बूढ़े ने कितनी गहराई में पैठकर मनुष्य की वास्तविक चरितार्थता का पता लगाया था।

अथवा

इसमें दो बात है एक तो नगर भर में राजा के न्याव के डर से कोई मुटाता ही नहीं, दूसरे और किसी को पकड़े तो वह न जाने बात बनावे कि हमी लोगों के सिर कहीं न घहराय और फिर इस राज में साधू–महात्मा इन्हीं लोगों की तो दुर्दशा है, इसमें तुम्हीं को फाँसी देंगे।